

23.7.19

~~पञ्चावली के रीत दुर्ग। कपि बन्धु, प्रदीपिका के
शब्द - शब्द कर कावाजे डिवाइसिमी। बार-बार
कावाजे डिवाजे के बाकपूदमी कुरुपालिनेरने
से कडक परकी कडक हाजरी के खानीज ही जाती
है। पञ्चावली के लप सुका (बेबादक नम्वर सेवक)~~

Om